NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारतीय रूपये में गिरावट

www.nextias.com

[i]भारतीय रुपये में गिरावट

संदर्भ

- हाल ही में, भारतीय रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले ₹85 के स्तर को पार कर गया, जो डॉलर के मुकाबले क्षीण होने की दीर्घकालिक प्रवृति को दर्शाता है। एक दशक पहले यह दर ₹61 थी, और इस वर्ष के प्रारंभ में यह ₹83 थी।

विनिमय दर

- **परिभाषा:** विनिमय दर एक मुद्रा का दूसरे मुद्रा के सापेक्ष मूल्य है। उदाहरण के लिए, ₹85 प्रति $1 का तात्पर्य है कि एक अमेरिकी डॉलर खरीदने के लिए 85 भारतीय रुपये की आवश्यकता है।
    - जब अमेरिकी डॉलर की माँग रुपये की माँग से अधिक हो जाती है, तो रुपया कमजोर हो जाता है और डॉलर मजबूत हो जाता है।
- **कार्य:** यह निर्धारित करता है कि एक मुद्रा को दूसरे के लिए व्यापार करने के लिए कितनी मुद्रा की आवश्यकता है, जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश के लिए महत्त्वपूर्ण है।

रुपये के कमजोर होने के लिए उत्तरदायी कारक

- **व्यापार घाटा:** अक्टूबर 2024 में भारत का व्यापार घाटा बढ़कर 26.83 बिलियन डॉलर हो गया, जो आयात के भुगतान के लिए डॉलर की अधिक माँग को दर्शाता है। यह रुपये की कमजोरी में योगदान देता है।
- **पूँजी बहिर्वाह:** विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने 2024 में अब तक (20 दिसंबर तक) भारतीय बाजारों से 43,856 करोड़ रुपये की शुद्ध राशि निकाली है, जिससे रुपये पर दबाव बढ़ रहा है।
- **मजबूत अमेरिकी डॉलर:** अमेरिकी डॉलर सूचकांक, जो प्रमुख मुद्राओं की एक बास्केट के मुकाबले डॉलर को मापता है, इस वर्ष लगभग 15% बढ़ा है, जो डॉलर की मजबूती को दर्शाता है और रुपये सहित अन्य मुद्राओं को तुलना में कमजोर बनाता है।
- **उच्च मुद्रास्फीति:** भारत की खुदरा मुद्रास्फीति इस वर्ष के अधिकांश समय के लिए RBI के 2-6% के लक्ष्य सीमा से ऊपर रही है, जो अक्टूबर में 6.77% तक पहुँच गई। विभिन्न व्यापारिक भागीदारों की तुलना में यह उच्च मुद्रास्फीति भारतीय निर्यात को कम प्रतिस्पर्धी बना सकती है।
- **सेवाओं में व्यापार:** यदि भारतीय अमेरिकी सेवाओं (जैसे पर्यटन) पर अमेरिकियों की तुलना में भारतीय सेवाओं पर अधिक व्यय करते हैं, तो डॉलर की माँग बढ़ जाती है।

कमज़ोर रुपए के प्रभाव

- **महँगा आयात:** इस वर्ष कच्चे तेल की कीमतों में 10% से अधिक की वृद्धि हुई है, और कमजोर रुपया तेल आयात की लागत में वृद्धि करता है, जिससे मुद्रास्फीति बढ़ती है तथा घरेलू बजट प्रभावित होता है।
- **ऋण का भार:** जून 2024 के अंत में भारत का बाहरी ऋण $620.7 बिलियन था। कमजोर रुपया इस ऋण की सेवा की लागत को बढ़ाता है, जिससे सरकारी वित्त पर दबाव पड़ता है।
- **आउटबाउंड यात्रा:** अमेरिका की यात्रा की लागत में काफी वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए, एक वर्ष पहले जिस यात्रा की लागत 5 लाख रुपये थी, वह अब रुपये के मूल्यह्रास के कारण लगभग 5.75 लाख रुपये होगी।
- **निर्यातकों के लिए लाभ:** कमजोर रुपया वैश्विक बाजार में भारतीय निर्यात को अधिक प्रतिस्पर्धी बना सकता है, जिससे संभावित रूप से निर्यात-उन्मुख उद्योगों को बढ़ावा मिल सकता है।

रुपए को मजबूत करने के लिए कदम

- **निर्यात को बढ़ावा देना:** सरकार उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन (PLI) योजनाओं जैसी पहलों के माध्यम से निर्यात को बढ़ावा देने का लक्ष्य बना रही है। नवंबर 2024 में भारत के व्यापारिक निर्यात में वर्ष-दर-वर्ष 10.3% की वृद्धि हुई, जो कुछ सकारात्मक गति का संकेत है।
- **विदेशी निवेश को आकर्षित करना:** सरकार ने व्यापार करने में आसानी को बेहतर बनाने और FDI को आकर्षित करने के लिए कदम उठाए हैं। भारत को अप्रैल से सितंबर 2024 के बीच 46.1 बिलियन डॉलर का FDI प्राप्त हुआ।
- **मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना:** RBI मुद्रास्फीति से निपटने के लिए ब्याज दरों में वृद्धि कर रहा है। हालाँकि, मुद्रास्फीति एक चुनौती बनी हुई है।
- **विविधीकरण:** भारत अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करने के लिए विभिन्न देशों के साथ रुपये में व्यापार करने की संभावना खोज रहा है।

निष्कर्ष

- भारतीय रुपए का कमज़ोर होना एक जटिल मुद्दा है जिसके विभिन्न कारक इसमें योगदान दे रहे हैं। यह जहाँ चुनौतियों को प्रस्तुत करता है, वहीं निर्यात-उन्मुख उद्योगों के लिए अवसर भी प्रदान करता है। सरकार को अंतर्निहित कारणों को दूर करने, नकारात्मक प्रभावों को प्रबंधित करने और कमज़ोर रुपए के संभावित लाभों का लाभ उठाने के लिए अपने प्रयास जारी रखने की आवश्यकता है।

Source: IE

■■■■

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न. अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपये के हाल के अवमूल्यन पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारत में विनिमय दर में उतार-चढ़ाव को प्रभावित करने वाले कारकों पर चर्चा कीजिए। भारत के व्यापार, मुद्रास्फीति और निवेश वातावरण पर इसके प्रभावों का विश्लेषण कीजिए।